॥ ओ३म् ॥

गायत्री-प्रार्थना

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ।

ओं=सर्वव्यापक जो सब की रक्षा करते हैं भगवान्।
भूः=सर्व को सत्ता स्फूर्ति-दाता, सत्यस्वरूप महान्॥
भुवः=दुःख के नाशक, चिन्मय, जिनका उत्तम ज्ञानस्वरूप।
स्वः=सर्वसुखदायक, सुखमय, परम आत्मा, अलख, अनूप॥
तत्=अनन्त हैं, सर्वसार हैं, जिनका कोई पार नहीं।
सवितुः=सर्वोत्पादक, रक्षक, प्रेरक, करे संहार वही॥
वरेण्यम्=है वर्णन करने योग्य जगत् में उनका नाम।
भर्गो=ज्योतिर्मय पापों के भर्जनकर्ता, पूरणकाम॥
देवस्य=देते हैं सबको दिव्य प्रकाश, शक्ति, आनन्द।
धीमहि=ध्याते हैं हम सब पूर्ण ब्रह्म श्री परमानन्द॥
धियः=हमारी बुद्धि वृत्तियों को वह दीनबन्धु भगवान्।
यः=जो एसी महिमा वाले परमेश्वर हैं दयानिधान॥
नः=सभी हम जीव मात्र के उर में जिनका वासस्थान।
प्रचोदयात्=वो करें प्रेरणा जिससे हम पायें उत्थान।

भावार्थ—यत्तेजः सवितुर्देवस्य वरेण्यम् तदुपास्महे।
तत्तेजोऽस्माकं बुद्धीः श्रेयस्करेषु नियोजयेत्॥
आदिदेव का श्रेष्ठ तेज जो उसका हम करते हैं ध्यान।
श्रेय कर्म में सदा हमारी बुद्धि लगावे वह भगवान्॥

व्यास पूजा सं० २०१४ के अवसर पर
गुरु चरणों में भेंट श्री भरथरी हरि मन्दिर
रामपुरा द्वारा प्रकाशित।

लेखक:—
स्वामी आनन्द मुनि शास्त्री बी० ए०
श्रीभगवद्भक्ति आश्रम, रेवाड़ी (पंजाब)